अनिरुद्ध कृत भगवती आर्या देवी स्तुति

Gurudev Raj Verma

Mob- +91-9897507933

WhatsApp- +91-7500292413

Website- gurudevrajverma.com

Email- mahakalshakti@gmail.com

जब उषा के साथ वीर अनिरुद्ध बलि कुमार राजा बाणासुर के द्वारा बाणनगर में बंदी बना लिये गये, तब वे अपनी रक्षा के लिये कोटवती देवी की शरण में गये। उस समय अनिरुद्ध ने जिस स्तोत्र का पाठ किया वह इस प्रकार है–

अनिरुद्ध ने कहा– जो अनन्त, अक्षय, दिव्य, आदिदेव और सनातन हैं, उन सर्वश्रेष्ठ जगदीश्वर नारायणदेव को नमस्कार करके विश्ववन्दित वरदायिनी चण्डी कात्यायनी आर्या देवी का मैं श्रीहरि के द्वारा प्रशंसित नामों से कीर्तन करुंगा।

ऋषियों और देवताओं ने वाणीरूपी पुष्पों द्वारा जिन मंगलमयी देवी की पूजा की है, जो सबके शरीर में विराजमान हैं तथा सम्पूर्ण देवता जिन्हें नमस्कार करते हैं, उन आर्यादेवी का मैं गुणगान करुंगा।

जो देवराज इन्द्र और भगवान् विष्णु की बहन है, उन देवी को मैं अपने हित के लिये नमस्कार करता हूं तथा हाथ जोड़कर पवित्र हो भावशुद्ध हृदय से उनकी स्तुति करना चाहता हूं।

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413

जो गौतमीस्वरूपा, कंसको भय देने वाली, यशोदा का आनन्द बढ़ाने वाली, पवित्र, गोकुल में आविर्भूत तथा नंदगोप की नन्दिनी हैं, उन आर्यादेवी को मैं नमस्कार करता हूं।

जो प्राज्ञा, दक्षा, कल्याणस्वरूपा, सौम्या, दानवमर्दिनी, सबके शरीर में विद्यमान तथा सम्पूर्ण भूतों द्वारा वन्दित हैं, उन आर्यादेवी को मेरा प्रणाम है।

जो दर्शनी, पूरणी, मायास्वरूपा, अग्नि, सूर्य और चन्द्रमा के समान कान्तिवाली, शांतिमयी, ध्रुवा, सबकी जननी, मोहिनी तथा शोषणी हैं, ऋषियों सहित सम्पूर्ण देवता जिनकी सेवा करते हैं, समस्त देवता जिनके चरणों में शीश झुकाते हैं, जो काली, कात्यायनीदेवी, भयदायिनी तथा भयनाशिनी हैं, उनको मैं नमस्कार करता हूं।

जो कालरात्रि, इच्छानुसार सर्वत्र जा सकने वाली, त्रिनेत्रधारिणी और ब्रह्मचारिणी हैं, जो विद्युत्स्वरूपा, मेघ के समान गर्जना करने वाली, वेताली और विशालमुख वाली हैं, उन देवी को मैं नमस्कार करता हूं।

जो यूथकी प्रधान अध्यक्षा, महासौभाग्यशालिनी, शकुनी, रेवती आदि ग्रहस्वरूपा तथा तिथियों में पंचमी, षष्ठी, पूर्णमासी और चतुर्दशीस्वरूपा हैं, उन देवी को मैं नमस्कार करता हूं।

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413

27 नक्षत्र, सम्पूर्ण नदियां और दसों दिशाएं- ये जिनके स्वरूप हैं, जो नगरों, उपवनों, उद्यानों और अट्टालिकाओं में उनकी अधिष्ठात्री देवी के रूप में निवास करती है, उन आर्यादेवी को मैं नमस्कार करता हूं।

जो ह्रीं, श्रीं, गंगा, गंधर्वा, योगिनी तथा सत्पुरुषों को योग प्रदान करने वाली हैं, उन कीर्ति, आशा, दिशा, स्पर्शा एवं सरस्वती नामवाली देवी को मैं प्रणाम करता हूं।

जो वेदों की माता, भक्तवत्सला सावित्री, तपस्विनी, शांतिकरी, एकानंशा एवं सनातनस्वरूपा हैं, उन आर्यादेवी को मेरा नमस्कार है।

जो कुटीरवासिनी, मत्त बना देने वाली, अत्यन्त कोपना, इला, मलयवासिनी, सम्पूर्ण भूतों को धारण करने वाली, भयंकरी, कूष्माण्डी और कुसुमप्रिया हैं, उन देवी को मेरा नमस्कार है।

जिनका स्वभाव दारुण है, आवासस्थान भी मत्त बना देने वाला है, जो विंध्य और कैलास पर निवास करती हैं, श्रेष्ठांगना हैं, सिंह जिनका रथ या वाहन है, जो बहुत से रूप धारण करने वाली तथा वृषभचिह्न से चिह्नित ध्वजवाली हैं, उन देवी को मेरा नमस्कार है।

जो दुर्लभ, दुर्जय, दुर्गम, निशम्भरासुर को भय दिखाने वाली, देवप्रिया, सुरस्वरूपा तथा वज्रपाणि इन्द्र की अनुजा हैं, उन कल्याणमयी देवी को मेरा नमस्कार है।

जो किरातवेष धारण करने वाली, चीरवस्त्र धारिणी और चोरों की सेना से नमस्कृत हैं तथा जो घृत पीने वाली, सोमरस का पान करने वाली, सौम्यस्वरूपा एवं समस्त पर्वतों में निवास करने वाली हैं, उन देवी को मैं नमस्कार करता हूं।

जो निशुम्भ और शुम्भ का संहार करने वाली हैं, जिनके स्तन हाथी के कुम्भस्थल के समान जान पड़ते हैं तथा सिद्ध और चारण जिनकी सेवा में लगे रहते हैं, जो कार्तिकेय की जननी हैं, जिनसे कुमार की उत्पत्ति हुई है तथा जो पर्वत की पुत्री होने पर भी सर्वत्र विचरने वाली हैं, उन पार्वती देवी को मैं प्रणाम करता हूं।

50 देवकन्याओं में (दक्षप्रजापति की पुत्रियां), जो देवताओं की पत्नियां हैं, उनमें, कद्रू के जो हजारों पुत्र हैं– उनके पुत्रों और पौत्रों की जो सुन्दरी स्त्रियां हैं– उनमें, माता और पितामें, स्वर्ग के देवताओं और अप्सराओं सहित ऋषिपत्नियों में, यक्षों और गंधर्वों की स्त्रियों में, विद्याधरों की नारियों में और सतीसाध्वी मानवी स्त्रियोंमें, इस प्रकार इन उपर्युक्त महिलाओं में

आप जगन्माता देवी का निवास है, क्योंकि आप सम्पूर्ण भूतों का आश्रय हैं। तीनों लोकों में सर्वत्र आपके चरणों में मस्तक झुकाया जाता है।

किन्नर लोग उच्चस्वर से गीत गाकर आपकी सेवा करते हैं। आप अचिन्त्य और अप्रमेय हैं, जो हैं सो हैं, आपको नमस्कार है। गौतमनन्दिनी! इन पूर्वोक्त नामों से और दूसरे नामों से भी आपका ही कीर्तन होता है।

विशाललोचने! मैं आपकी कृपा से बिना किसी विघ्नबाधा के शीघ्र बंधनमुक्त हो जाऊं। आप मेरे ऊपर कृपादृष्टि करें, मैं आपके श्रीचरणों की शरण लेता हूं। आप मुझे सभी बंधनों से छुड़ाने योग्य हैं।

ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, चन्द्रमा, सूर्य, अग्नि, वायु, अश्विनीकुमार, वसु, विश्वेदेव, साध्यगण, मरुद्गण, पर्जन्य, धाता, भूमि, दसों दिशाएं, गौ, नक्षत्रसमूह, ग्रहगण, नदियां, सरोवर, सरिताएं, समुद्र, नाना विद्याधर, सर्प, नाग, गरुड़, गंधर्व और अप्सराओं के समूह– इस प्रकार देवी के नामों का बारम्बार कीर्तन करने से इस सम्पूर्ण जगत् का कीर्तन हो जाता है।

जो एकाग्रचित्त होकर देवी के इस पवित्र स्तोत्र का पाठ करता है, देवी उसे सातवें महीने में उत्तम वरप्रदान करती हैं। देवी की 18 भुजाएं हैं। वे दिव्य आभरणों से विभूषित हैं। हार से उनके सारे अंग सुशोभित हैं। मुकुट की आभा से उनके आभूषण चमक उठे हैं। कात्यायनि! जब आपकी स्तुति की

जाती है, तब आप उत्तम वर प्रदान करती हैं। अतः वरदायिनी वामललोचने! मैं आप देवी की स्तुति करता हूं।

महादेवी! आपको नमस्कार है। आप सदा मुझ पर सुप्रसन्न रहें और मुझे श्रेष्ठ आयु, पुष्टि, क्षमा तथा धैर्य प्रदान करें। मैं बंधन में पड़ा हुआ हूं, किंतु इससे मुक्त हो जाऊं– मेरा यह संकल्प सत्य हो।

इस प्रकार स्तुति की जाने पर दुर्गम पराक्रम करने वाली महादेवी दुर्गा ने बंधनागार में अनिरुद्ध के पास आकर उन्हें दर्शन दिया। उस शरणागत वत्सला देवी ने बाणनगर में बंधे हुए वीर अनिरुद्ध को उनका हितसाधन करने के लिये बंधन से मुक्त कर दिया। साथ ही उन अमर्षशील वीर अनिरुद्ध को सान्त्वना प्रदान की। उस समय वीर अनिरुद्ध ने देवी का पूजन किया।

देवी ने बंधनागार में अनिरुद्ध को अपनी कृपा का प्रत्यक्ष दर्शन कराया। जो नागपाश में बंधे हुए थे और उषा ने जिनके चित्त को चुरा लिया था, उन अनिरुद्ध के वज्रतुल्य पिंजरे को अपने हाथ के अग्रभाग से तोड़ फोड़कर देवी ने बाणपुर में अवरुद्ध हुए वीर अनिरुद्ध को मुक्त कर दिया और कृपा करने के लिये उद्यत हो उन्हें सान्त्वना देते हुए इस प्रकार कहा–

श्रीदेवी ने कहा– अनिरुद्ध! चक्रधारी भगवान् श्रीकृष्ण शीघ्र आकर तुम्हें पूर्णतः इस बंधन से छुड़ायेंगे, तब तक कुछ काल तक इस कष्ट को सहन करो। वे दैत्यसूदन श्रीहरि बाणासुर की सहस्र भुजाओं का छेदन करके तुम्हें अपनी पुरी ले जायेंगे। तदनन्तर अनिरुद्ध ने प्रसन्न होकर पुनः देवी का स्तवन किया।

अनिरुद्ध बोले– कल्याणस्वरूपे! वरदायिनी देवी! आपको नमस्कार है। देवशत्रुओं का नाश करने वाली देवि! आपको प्रणाम है। इच्छानुसार विचरने वाली सदाशिवे! आपको नमस्कार है। सबका हित चाहने वाली सर्वप्रिये! आपको नमस्कार है। शत्रुओं को सदा भय देने वाली देवि! आपको प्रणाम है तथा बंधन से छुड़ाने वाली देवि! आपको नमस्कार है। ब्रह्माणि! इन्द्राणि! रुद्राणि! भूत, वर्तमान और भविष्यस्वरूपे शिवे! सब प्रकार के भयों से मेरी रक्षा करें। नारायणि! आपको नमस्कार है। जगत् की रक्षा करने वाली प्रिय देवि! आपको नमस्कार है। मन और इन्द्रियों को वश में रखने वाली महाव्रतधारिणी भक्तप्रिये! जगन्मातः! गिरिजानन्दिनी! वसुधंरे! विशाल नेत्रों वाली नारायणि! आप मेरी रक्षा कीजिये! आपको नमस्कार है। दानवों को भय देने वाली देवि! सब प्रकार के दुःखों से मेरा पारित्राण कीजिये।

रुद्रप्रिये! भक्तों की पीड़ा दूर करने वाली महाभागे! मैं चरणों में मस्तक झुकाकर आप देवी को नमस्कार करता हूं। आपने मुझे बंधन में रहते हुए भी मुक्त कर दिया।

जो एकाग्रचित्त होकर इस पवित्र आर्या स्तोत्र का पाठ करता है, वह सब पापों से मुक्त होकर विष्णुलोक में जाता है और यदि बंधन में पड़ा हो तो उससे मुक्त हो जाता है। जैसा कि व्यासजी का सत्य वचन है। (हरिवंशपुराणे)

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

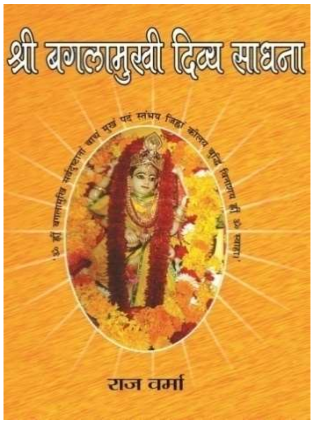

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413